A–0642

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

DMA-104

Diploma in Medical Astrology (DMA)

ग्रहोपचार के विविध आयाम

Examination February, 2026

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 100

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सौ (100) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (2×26=52)

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. संचित और प्रारब्ध कर्म की अवधारणा पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

2. रोगों के उपचार में रत्नों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

3. गोचर शब्द का अर्थ बताते हुए गोचरकुण्डली निर्माण विधि को सोदाहरण समझाइए।

4. दान के प्रयोजन एवं महत्व का वर्णन करते हुए सूर्य, चन्द्र एवं मंगल के दान की वस्तुओं का उल्लेख कीजिए।

5. सूर्य, मंगल एवं बुध महादशा फल में उत्पन्न होने वाले रोगों को विस्तार से लिखिए।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न (4×12=48)

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. अरिष्ट (बालारिष्ट) कारकत्व या मारकत्व का वर्णन कीजिए।

2. कर्मफल सिद्धान्त पर सुविस्तृत आलेख कीजिए।

3. नेत्ररोग, कर्णरोग, उदररोगों के ज्योतिषीय योगों पर प्रकाश डालिए।

4. अष्टकवर्ण से रोगविचार का वर्णन कीजिए।

5. बृहस्पति, शुक्र से सम्बन्धित विविध मान्त्रिक प्रयोगों पर प्रकाश डालिए।

6. रोगों के उपचार में रत्नों की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

7. रोग विचार में प्रश्नकुण्डली के योगों पर प्रकाश डालिए।

8. मंगल, राहु, गुरू, महादशा फल का वर्णन कीजिए।

****